अप्रैल-मई 2025 • मूल्य : 60 रुपए वर्ष 17 ISSN 2347-6613

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

इस अंक में

विजयदेव नारायण साही और सुभाष पंत पर विशेष सामग्री, इम्तियाज धारकर की कविताएं, वियतनामी कहानी, कमलाकांत त्रिपाठी, अजित कुमार राय के आलेख, अन्य कहानियां, कविताएं, अनुवाद और नियमित स्तंभ।

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

वर्ष 17 • अंक-1 • अप्रैल-मई 2025

संरक्षक

पंकज बिष्ट, अरविंद मोहन, डॉ. विनोद कुमार सिन्हा

संपादक

डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया

कार्यकारी संपादक

श्रीविलास सिंह

प्रबंध संपादक

ठाकुर प्रसाद चौबे

परामर्श संपादक एवं सहयोग

ज्योति स्वरूप शुक्ल, डॉ. पूनम सिंह, रघुवीर शर्मा

कानूनी एवम् वित्तीय सलाहकार

सिद्धार्थ सिंह (अधिवक्ता), **महेन्द्र तेवतिया** (सी.ए.)

शब्द संयोजन

प्रियांशु

ग्राफिक स्टुडियो

अमित कुमार सोलंकी

संपादकीय संपर्क एवं कार्यालय:
79 ए, दिलशाद गार्डन, नियर पोस्ट ऑफिस,
दिल्ली- 110095
मो. 09810636082
E-mail: officeparindepatrika@gmail.com
E-mail: parindepatrika@gmail.com

मूल्य: **60** रु. (एक प्रति), वार्षिक: **500** रु. संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक: **600** रु. वार्षिक (विदेश): **50** यू.एस.डॉलर, आजीवन व्यक्तिगत: **5000** रु. संस्था: **6000** रु.

बैंक के माध्यम से शुल्क भेजने के लिए

परिंदे पत्रिका का खाता 'पंजाब एंड सिंध बैंक' दिल्ली मे हैं। खाता का नाम-परिंदे है एवं खाता संख्या-04801100049782 है तथा इसका आई.एपफ.सी कोड *PSIB0000484* है।

संपादन-संचालन पूर्णत: अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

'परिंदे' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं। ♦ **'परिंदे'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

यह अंक...

संपादकीय

4. वैश्विक-आर्थिक-व्यवस्था में मँडराते अनिश्चितता के बादल: **डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया**

साक्षात्कार

6. **वरिष्ठ कथाकार सुभाष पन्त से आशीष सिंह की बातचीत**

धारावाहिक-उपन्यास

22. ऑक्टेवियो पाज़ और द मंकी ग्रैमेरियन: **डॉ. बिनोद सिन्हा**

आलेख

30. विजय देव नारायण साही और विऔपनिवेशीकरण: **अरुण कुमार त्रिपाठी**
49. अवध क्षेत्र का एक विदाई गीत और उसके ब्याज से कुछ जरूरी बातें: **कमलाकांत त्रिपाठी**
58. प्रयोगधर्मी नयी कविता का उत्तर काल और समकालीन कविता: **अजित कुमार राय**

कहानी

14. अ स्टिच इन टाइम: **सुभाष पंत**
24. ऑनस्क्रीन: **उर्मिला शिरीष**
37. मवाद: **राकेश भ्रमर**
51. पीर का पर्वत: **संजय कुमार सिंह**
53. खाकी कोट: **नात तिएन** (वियतनामी)
62. जमाई बाबू: **हरभजन सिंह मेहरोत्रा**
65. अहीर की उदारता: **स्वर्गीय झवेरचंद मेघाणी** (गुजराती)
73. खूबसूरत मोड़: **नमिता सिंह**

सुर-यात्रा

76. चल उड़ जा रे पंछी: विस्थापन का राग और मोहम्मद रफी की मार्मिकता: **विनोद कुमार**

कविताएं

43. **कात्यायनी**, 44. **नरेन्द्र पुंडरीक**, 46. **गोलेन्द्र पटेल**, 48. **प्रज्ञा मिश्रा**, 56. **राजेन्द्र शर्मा**, 70. **इम्तियाज़ धारकर**

किताबें

78. 'कुछ ऐसे ही': भावों की अनुगूँज को सार्थक करता काव्य संग्रह: **पवन कुमार**
80. एक प्रतिभाशाली, मेहनती और ईमानदार युवक के संघर्ष को बयान करता उपन्यास: **प्रवीण कुमार**
82. 'अप्रिय' आवृत्त को 'सहज' अनावृत्त करने का साहित्यिक प्रयास है 'चीनी मिट्टी': **भवतोष पाण्डेय**

आवरण चित्र: मंजीत बावा (1941-2008) के काल्पनिक और वास्तविक प्राणियों के चित्र भ्रमित करने की हद तक सरल और संवेदनशील कृतियाँ हैं जो पौराणिक, धार्मिक और दृढ़ परम्परा से प्रेरित हैं। प्रस्तुत चित्र भी इसी परंपरा का है और मनुष्य और पशु अंतर्संबंधों को रेखांकित करता है। यह उनकी भावना शृंखला की कृति है।

वैश्विक-आर्थिक-व्यवस्था में मँडराते अनिश्चितता के बादल

समकालीन विश्व व्यवस्था में प्रत्येक देश दूसरे से हरेक स्तर पर बहुत गहराई से जुड़ गया है, यातायात और संचार-साधनों की बहुतायत से व्यक्ति-वस्तु स्थानांतरण सहज, सरल और सुलभ हुआ, सड़क, समुद्र और वायुमार्ग की यात्राओं में गुणोत्तर वृद्धि हुई और सूचना संवहन के तीव्रतर होने से वैश्विक एकीकरण को अप्रत्याशित सफलता मिली, परिणामस्वरुप वैश्विक एकीकरण की प्रक्रिया ने ग्लोबल-विलेज की संकल्पना को साकार कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत अमेरिका और अन्य देशों ने संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विविध आनुषंगिक संगठनों को जन्म दिया, परिणामतः शीत-युद्ध के साथ-साथ विश्व शान्ति की स्थापना के सार्थक प्रयास चलते रहे और वैश्विक आर्थिक एकीकरण तथा वस्तु और सेवाओं के मुक्त व्यापार की दिशा में विश्व बहुत आगे बढ़ गया। 1979 के उपरांत चीन ने आर्थिक खुलेपन और सुधार की दिशा में कदम बढ़ाये तो 1991 की नयी आर्थिक नीतियों के साथ भारत भी अपनी अर्थव्यवस्था को विश्व के साथ एकीकृत करने की दिशा में बढ़ चला। 1995 में भारत विश्व व्यापार संगठन (WTO) का सक्रिय सदस्य बन गया और न केवल अपने बल्कि विकासशील देशों के हितों की रक्षा के लिए कटिबद्ध होकर विश्व स्तर पर मुखर होकर मुक्त व्यापार एवं बाजार के समर्थन में सक्रिय भूमिका अदा करने लगा।

आर्थिक एकीकरण और मुक्त व्यापार की राह में विश्व कई तरह की समस्याओं का सामना करता आया है, बीसवी सदी के अन्तिम दशक के उत्तरार्ध में दक्षिण एशियाई देशों जैसे थाईलैंड, इंडोनेशिया और दक्षिण कोरिया आदि की निर्यात-आधारित आर्थिक व्यवस्थायें पूरी तरह से चरमरा गयीं, मुद्रा-अवमूल्यन, निवेश-पलायन और आर्थिक अस्थिरता की संभावना ने इन देशों की पूरी अर्थव्यवस्था को चपेट में ले लिया और ये देश गंभीर मंदी का शिकार हुए। 2007-2010 का अमेरिकी सबप्राइम संकट एक बहुराष्ट्रीय वित्तीय संकट था, इस संकट ने एक समय पूरे विश्व को मंदी की चपेट में ले लिया था, काफी लोग रोजगार- विहीन हो गये थे और बहुत से व्यवसाय दीवालिये। एकीकृत वैश्विक आर्थिक व्यवस्था किस तरह से विश्व के एक देश की समस्याओं से प्रभावित होकर संकट-ग्रस्त हो सकती है, अमेरिकी सबप्राइम संकट इसका एक ज्वलंत उदाहरण है।

यूनाइटेड किंगडम ने 2016 में ही यूरोपीय संगठन से निकलने का निर्णय ले लिया था, पर उससे संबंधित विविध प्रक्रियाएं अंतिम चरण में 2020 तक पहुँचीं। यद्यपि ब्रेक्सिट के विविध प्रावधानों के तहत वस्तु विनमय में यूनाइटेड किंगडम और यूरोपीय संगठन के बीच किसी तरह का टैरिफ न लगायें जाने की संधि हुई, पर सर्विस सेक्टर में, जो कि यूनाइटेड किंगडम की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा है, उसमें ऐसी कोई संधि नहीं हुई। योरोपीय संगठन के मुक्त व्यापार में ब्रेक्सिट की घटना विचारणीय है, क्योंकि नई अमेरिकी टैरिफ दरों में वही मानसिकता, मुक्त वैश्विक व्यापार को बाधित करने की दिशा में सक्रिय हुयी है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में अंतिम उपभोक्ताओं को उचित दरों में सामान उपलब्ध हुआ, क्योंकि मुक्त व्यापार में विभिन्न देशों ने एक दूसरे पर कम से कम टैरिफ अधिरोपित किये। विश्व व्यापार संगठन के अस्तित्व में आने के उपरांत संपूर्ण विश्व में उत्पादन और स्थानांतरण की प्रक्रिया सहज और सरल बनाने पर पूरा जोर रहा है, जहाँ पर कच्चे माल की सहज सस्ती उपलब्धता हुई है, कम दामों में पूँजी, श्रम और सर्विसेज उपलब्ध रही हैं, वहीं पर वस्तुओं का उत्पादन कर पूरे विश्व में भेजा जाता रहा है। दूसरी तरफ बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने खूब लाभ कमाया तथा वस्तु और सेवाओं के मुक्त व्यापार का फायदा उठाया, पर इस प्रक्रिया में छोटे स्तर के उत्पादक, औद्योगिक इकाइयाँ और व्यापारी बहुत पीछे छूट गए। आर्थिक-वैश्वीकरण की प्रक्रिया का सर्वाधिक लाभ चीन को मिला, आज चीन विश्व का मैन्युफैक्चरिंग केंद्र बन गया है, माइनिंग से लेकर मैन्युफैक्चरिंग तक, लगभग हर तरह की वस्तुओं का उत्पादन चीन में हो रहा है, सप्लाई-चेन की पूरी प्रक्रिया में रॉ मैटेरियल से लेकर अंतिम उत्पाद तक लगभग हर तरह की वस्तु चीन में उत्पादित हो रही है। अमेरिका और यूरोप की ज्यादातर बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने चीन को ही अपने सामान का प्रमुख उत्पादन केंद्र बना लिया और उत्पादन के उपरांत ये सभी उत्पाद पूरे विश्व में निर्यातित होने लगे।

अमेरिका की नयी सरकार विश्व की वर्तमान व्यवस्था को अपने हितों के प्रतिकूल बता रही है, राष्ट्रपति ट्रंप के विभिन्न आर्थिक थिंक टैंक ये मानते हैं कि अमेरिका के घरेलू उद्योगों को मुक्त आर्थिक व्यापार व्यवस्था से नुकसान